कलि में देख्या ग्यान

कलि में देख्या ग्यान अचंभा।
बातन मोहोल रचें अति सुंदर, चेजा जिमी न थंभा।।

खट प्रमान से ब्रह्म है न्यारा, सो कहें अद्वैत हम आप।
माया ईश्वर त्रिगुन हमथें, हमहीं रहे सबमें व्याप।।

तीन सरीर उड़ावें मुख थें, आप होत हैं ब्रह्म।
पूछे तें कहें हम भोगवे, प्रालब्ध जो करम।।

ऐसे कोट ब्रह्मांड होवें पल में, अद्वैत के हुकम।
ए कहावें ब्रह्म सुध नहीं ब्रह्म घर की, द्वैत अद्वैत नहीं गम।।

सुकमुनी बानी बोल्या वेदांत, सो इनों क्यों समझी जाए।
होसी प्रगट प्रकास निज बुध का, सो महामत देसी बताए।।